प्रश्न/उत्तर

प्र०१ 'रस्सी' यहाँ किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है?
उ० कवयित्री ने नारायन शरीर और प्राण के लिए रस्सी का प्रयोग किया है। रस्सी कच्चे धागे से बनी हुई है, जो क्षीण (कमजोर) और नाजुक है। इसे कमजोर रस्सी ने जीवन रूपी नाव को अधिक दिनों तक नहीं खींचा जा सकता।

प्र०२ कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?
उ० कवयित्री मानती है कि जीवन रूपी नाव नश्वर शरीर या प्राण रूपी कच्चे धागे की रस्सी से बंधी है, जो कभी भी टूट सकती है अर्थात् जीवन समाप्त हो सकता है। ईश्वर मिलन के उसके सारे प्रयास व्यर्थ हो रहे हैं।

प्र०३ कवयित्री का घर जाने की चाह से क्या तात्पर्य है?
उ० कवयित्री का घर 'जाने की चाह' से तात्पर्य है- ईश्वर या परमात्मा से मिलन। इसका अर्थ यह है कि कवयित्री इस सांसारिक माया जाल से मुक्त होना चाहती है अर्थात परमात्मा से मिलन और मोक्ष की प्राप्ति चाहती है।

date 28 /4/20
कक्षा 9वीं
कविता -: वाख
लिखो व याद करो

प्र०४ भाव स्पष्ट कीजिए।

(क) जेब टटोली कौड़ी न पाई।
उ० प्रस्तुत पंक्ति में कवयित्री ने जीवन की निरर्थकता का वर्णन किया है। कवयित्री कहती है कि सीधी सहज चाल चलने की

DATE: / /

अपेक्षा टेढ़ी-मेढ़ी चाल चलकर मैंने सब कुछ गँवा दिया और जब मुक्ति का समय आया, तो पाया कि मेरे हाथ में कुछ नहीं था।

(ख) खा खाकर कुछ पाएगा नहीं, न खाकर बनेगा अहंकारी।

उ० कवयित्री ने भोगवाद और संन्यास को भक्ति का सहज मार्ग नहीं माना। ये दोनों मनुष्य को अतिवादी बनाते हैं। भोगी को व्यक्ति को जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं होता और संन्यासी व्यक्ति तंत्र-साधनाओं के बल पर अहंकारी हो जाता है और सब कुछ गँवा बैठता है।

प्र०९ बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललद्यद ने क्या उपाय सुझाया है?

उ० कवयित्री ने कहा है कि भोग और संन्यास से मुक्त रहकर और इंद्रियों को काबू कर समान भाव से जीने वाले व्यक्ति के लिए बंद द्वार की साँकल खुल जाती है, तब उसका परमात्मा से मिलन संभव हो जाता है। मनुष्य को न तो अधिक भोगों में लिप्त रहना चाहिए और न ही व्रत-उपवास की अधिकता क्योंकि इससे हानि पहुँचती है।